छन्द

छन्दोमयी रचना को पद्य कहते हैं, और छन्दविहीन रचना को गद्य। छन्दों के माध्यम से काव्य सहज, रमणीय बन जाता है। छन्दोमयी रचना अनेक चरणों में विभक्त होती है, और प्रत्येक चरण में वर्णों या मात्राओं की एक निश्चित संख्या होती है, लघु-गुरु तथा गणों आदि के नियमों का पालन करना होता है। छन्दशास्त्र में ह्रस्व को लघु और दीर्घ को गुरु कहा जाता है। लघु वर्ण की एक मात्रा गिनी जाती है, और गुरु वर्ण की दो मात्राएँ। छन्दों में दो से अधिक मात्राएँ किसी वर्ण की नहीं गिनी जातीं।

छन्दों के प्रकार

छन्दों के दो प्रकार होते हैं — (1) मात्रिक और (2) वार्णिक। मात्रिक छन्दों में मात्राओं की गणना की जाती है, और वार्णिक छन्दों में वर्णों की।

छन्दों के पुनः तीन प्रकार होते हैं — (1) सम, (2) अर्धसम, (3) विषम।

सम छन्दों के समस्त चरणों में (चार-चरणों) मात्राओं या वर्णों की संख्या बराबर होती है - जैसे — चौपाई।

अर्धसम छन्दों के दो-दो चरणों में मात्राओं या वर्णों की संख्या बराबर होती है। जैसे — दोहा।

विषम छन्द - जो छन्द सम या अर्धसम नहीं होते, उन्हें विषम छन्द कहते हैं। चार से अधिक चरणों वाले छन्दों को भी विषम छन्द कहा जाता है। जैसे — 'छप्पय' और 'कुण्डलिया'।

Scanned with CamScanner

मात्राओं की गणना :- मात्रा केवल स्वर की होती है। व्यंजन की नहीं। छन्दों में वर्णों या मात्रा गिनने में केवल स्वर को ध्यान में रखा जाता है, व्यंजन पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता, उसे छोड़ दिया जाता है। 'स्वास्थ्य' शब्द की तीन मात्रायें होंगी, दो 'आ' की और एक 'अ' की; स् + व् + आ + स् + थ् + य + अ)।

(लघु स्वर) हैं
अ, इ, उ, ऋ, — इनकी एक-एक मात्रा होती है। इनके उच्चारण में कम समय लगता है, अर्थात एक मात्रा का समय लगता है।

(गुरु स्वर हैं) — आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, — इनके उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगता है।

एक मात्रा को हृस्व में (।) के रूप में दर्शाया जाता है और दीर्घ स्वर की मात्रा को अंग्रेजी के (S) वर्ण की तरह लिखकर बताया जाता है।

Scanned with CamScanner